प्रस्तावना :-

गाँधी की महानता और उनके संघर्ष की बातें इतनी बार और इतनी तरह से कही गई हैं कि वे असाधारण प्रतीत होती है| अधिकांश विद्वानो का मत है कि गाँधी अपने समय की पैदाइश थे| हालांकि इस सन्दर्भ में ये कहना ज्यादा सही होगा कि समय ने गाँधी को गढ़ा| भारत की सभ्यता और संस्कृति जिन मनुष्यों को गढ़ती रही है, गरीब, दु:खी, संतोषी, कर्मठ इत्यांदि| शायद वैसे ही कुछ थे| गाँधी वैदिक, राजनेता और समाज सुधारक नहीं थे| हालांकि उनके जीवन कार्य इन दिशाओं में रहे| यदि गाँधी को ठीक-ठीक परिभाषित करना हो तो वे एक पराजित गुलाम देश का चोट खाया हुआ स्वाभिमान एवं भारत के आमजन की संभावना थे, जिसे समय और वाकयों ने भारत के साधारण जन की आत्मिक अभिव्यक्ति यथास्थिति को नहीं संभावनाओं को संबोधित कर दिया था| उसे अन्दर तक छुआ था. जिन परिस्थितियों व समय ने गाँधी को गढ़ा वह स्थितियाँ विषम थीं| उनका कार्यभार बहुत बड़ा था और समाज बेहद जटिल और बहुस्तरीय वे सर्वहारा और सांस्कृतिक क्रांति भले न कर पाये पर गाँधी जी ने एक देश बनाया| गुलामी की सदियों और साम्राज्यवाद के आघातों ने हिन्दुस्तान की चरित्र को तोड़ दिया था| इस चरित्र को फिर से गढ़ने की प्रक्रिया का नाम गाँधी था| हमने गाँधी को खो दिया, जिन्हे फिर से पाना मुश्किल है, क्योंकि गाँधी को खोने का मतलब व्यक्ति गाँधी व भाव का संसार था, जिसमें भारतीय आज भी अपने होने की फिर से जाँच पड़ताल कर रहे हैं| हमारे विचार ही हमारे शब्द बनते हैं| गाँधी ने इस गूढ़ मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को अपने जीवन और व्यक्तित्व के माध्यम से हमारे सामने रखा है|

गाँधी की सोच और वैचारिकी में यह बात बुनियादी बात थी कि हिंसा से कोई शांति सुव्यवस्था और सामाजिक समानता और सद्भावना स्थापित नहीं हो सकेगी, पर आज हमारे जीवन में हिंसा का स्वरूप कितना भयावह और विकराल है, इसे बताने की जरूरत नहीं हैं| दुर्भाग्य से जो समाज भी इससे बनेगा वह भय अविश्वास और हिंसा का ही बनेगा और यह सिलसिला निरंतर चलता ही जाएगा| अत: इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए गाँधी की बौद्धिकता, तत्वदर्शी प्रज्ञा, समाज और सभ्यता के वतर्मान और भविष्य को जानने का प्रयास छात्रों में गाँधी वैचारिक प्रभावशीलता की पड़ताल की जाएगी।

उपकल्पना :-

क्या सचमुच गाँधी असाधारण या अलौकिक थे, या गाँधी ठीक वैसे हैं जैसा उनके वैचारिक पक्षधर या विरोधियों की परम्परा उन्हें बताती है| इन सभी सवालों से गुजरते हुए गाँधी की वैचारिकी प्रभावशीलता का अधययन खासकर युवा छात्रों की दृष्टि से अपने वर्तमान संदर्भ में गाँधी की वैचारिकी को गहराई से जानना और वैश्विक स्थितियों के संदर्भ में उसका ठीक-ठीक मूल्यांकन करना होगा|

महत्व :-

इस शोध अध्ययन के द्वारा गाँधी की वैचारिकी व छात्रों के ऊपर उन विचारों प्रभावशीलता का अध्ययन किया जाएगा गाँधी का फलक बहुत ही व्यापक है| दुर्भाग्य से आज के युवा गाँधी के वैचारिकी व उनके व्यक्तित्व से कम प्रभावित हैं| लगातार हो रहे तकनीकी विकास व आधुनिकता की इस

अंधी दौड़ में हमारी बौद्धिक चेतना को आघात पहुचा है| वह समाज के प्रति नैतिक जवाब देही से विमुक्त होते जा रहे हैं| ऐसे में छात्रों पर पड़ने वाले गाँधी के वैचारिक प्रभाव के अध्ययन से गाँधी को नए सिरे से समझने एवं आज के सन्दर्भ में गाँधी के विचारों की प्रासंगिकता को जानने का अवसर मिलेगा| जो भविष्य के दिशा निर्धारण में अपनी भूमिका दे सकेंगे|

उद्देश्य :-

- गाँधी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन
- गाँधी के शैक्षणिक पृष्ठभूमि का अध्ययन
- गाँधी विचारों की प्रभावशीलता एवं छात्रों की दिशा का अध्ययन
- छात्रों पर पड़ने वाले गाँधी के वैचारिक प्रभाव का अध्ययन

शोध प्रविधि :-

- अंतर्वस्तु का अध्ययन
- क्षेत्र अध्ययन
- प्रश्नावली
- साक्षात्कार